लोक गीत – वर्तमान परिदृश्य और प्रभाव

22

डा. पूनम*

सारांश

लोक जीवन में लोक साहित्य महत्वपूर्ण है, जन–सामान्य की भावनाओं का एक व्यक्त माध्यम है। इस लोक साहित्य के अन्तर्गत अनेक विद्या है। जैसे लोक नाट्य लोक कथा, लोक गाथा, लोक नृत्य, लोक गीत, लोक जीवन में लोक गीतों का विशेष महत्व है। जीवन के सभी उत्सवों, पर्वों, संस्कारों में ये लोक गीत गाये जाते हैं। इस प्रकार लोक गीत जनमानस की वृत्तियों, अभिव्यक्तियों का एक व्यक्त सरल सुलभ, साधन है। लोकगीत जन समाज के अपने गीत होते हैं। लोकगीत अनेक प्रकार के होते हैं जिसमें संस्कार गीत, ऋतु गीत पर्व त्यौहार गीत, धार्मिक गीत, लीला गीत लौरी गीत, बाल क्रीडा गीत। लोकगीतों के पीछे सामाजिक परम्परा होती है। परन्तु आज के भागदौड़ के जीवन में ये लोगगीत कहीं खो गये हैं। फिर भी इनका संरक्षण एवं सुरक्षा का दायित्व हम पर है और हमें, अपना पूर्ण योगदान देना चाहिये ये हमारी अमूल्य निधियां हैं। धरोहर है जिसे हमें सहेजना है।

मूल बिन्दु

लोक साहित्य, लोग गीत, सामान्य जन, लोक जीवन, संस्कार, लोक मानस, विकास, व्यवस्तता, सामाजिक परम्परा।

लोक का अर्थ उस जन समुदाय से है जो भरण–पोषण के लिये श्रम करता है, जीवन की सुचारू रूप चलाने के लिए संघर्ष करता है। हिन्दी साहित्य में भी परम्परागत रूप में लोक शब्द का प्रयोग 'सामान्य जन' के रूप में किया जाता है।

डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार – ''लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नहीं है, बल्कि नगर और ग्रामों में फैली हुई वह समूची जनता है, जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियां नहीं है।

लोक साहित्य का तात्पर्य सामान्य जन से है, जो कंठ के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्ताक्षरित करता रहता है। लोक साहित्य सहज, सरल, अकृत्रिम स्वतः स्फूर्ति और शास्त्र के बन्धनों से मुक्त होता है।

लोक साहित्य में लोक कथा, लोक गीत, लोक गाथा, लोक नष्त्य आदि सभी विधाओं का समावेश होता है। जहां लोक है वहां लोक साहित्य है। लोक जीवन में लोक गीत का विशेष महत्व है। लोक गीत वैदिक मंत्र का कार्य करते हैं। जन्म से लेकर विवाह, मरण आदि तक के विविध असवरों पर लोक गीत गाने की परम्परा है। सम्पूर्ण वर्ष सभी ऋतुओं में जीवन के विविध क्रिया कलापों के अवसर पर लोकगीत गाये जाते हैं। कोई भी व्रत, पर्व, त्यौहार, उत्सव मेले ऐसे नहीं है, जब लोकगीत ना गाए जाते हों।

*एसोसिऐट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कनोहरलाल स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, मेरठ

लोक गीत मानव जीवन की अनुभूति अभिव्यक्ति और हृदयोगार है तथा जीवन का स्वच्छ और साफ दर्पण भी है। जिसमें समाज के व्यक्त है। व्यक्त जीवन का प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है। लोक गीत लोक जीवन की वास्तविक भावनाओं को प्रस्तुत करता है।

लोकगीत के द्वारा जन जीवन के सभी पक्षों का दर्शन होता है। जन समाज के अपने गीत होते हैं।

जीवन की प्रत्येक अवस्था जन्म से लेकर मृत्युपरान्त लोकगीत समयानुकुल भावनाओं को अभिव्यक्ति देता है। लोकगीत में जीवन के हर्ष–विशाद, आशा–निराशा, सुख–दुख सभी की अभिव्यक्ति होती है।

लोकगीतों से मुनष्य की व्यवहारिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति होती है– काम का बोझ हल्का करना, अत्याचार का विरोध करना तथा सामान्य जनता का मनोरंजन करना।

लोकगीत समाज की धरोहर की नहीं लोकजीवन का दर्पण भी है। लोकगीतों की प्रमुख विशेषता है कि इसमें निहित मिठास छंद के स्थानों पर इसके लय में अद्धत मिठास और संवेदना भरा होता है। जिसे पढ़ने में जितना आनन्द नहीं मिलता उससे ज्यादा सुनने में आनन्द मिलता है। लोकगीतों का गायन बहुतायत में होता है।

लोकगीत विभिन्न प्रकार के होते जिसमें मुख्यतः निम्न श्रेणियों में विभाजित किया जाता है–

1. **संस्कार गीत –** इसके, अंतर्गत संस्कारों की संख्या 16 मानी गई है जैसे – सोहर, खेलावन, मुण्डन, जनेऊ, विवाह, कोहवर, बेटी विदाइ, समुझावन, गौना, आदि गीत।

2. **ऋतु गीत –** इसके अन्तर्गत कजली, बारहमासा, कगुआ, चेता आदि गीत आते हैं।

3. **व्यवसाय या श्रम गीत –** इसके अन्तर्गत जतसार, रोपनी, कोल्हू, मल्लाह आदि गीत आते है।

4. **पर्व त्यौहार के गीत –** इसके अन्तर्गत छठ गीत, तीज, जितिया, कटमा, बिहुला – विशहरी आदि गीत है।

5. **धार्मिक गीत –** इसके अन्तर्गत शीतला माता का गीत, प्रभाती, ग्राम देवता आदि गीत आते हैं।

6. **लीला गीत –** इसमें झूमर, झूलन गीत आते हैं।

7. **लोरी गीत –** यह नवजात शिशुओं की गीत आते हैं।

बाल क्रीड़ा गीत – इसके अन्तर्गत खेल गीत आते हैं।

8. लोक गीतों ने मूलस्रोत से कभी किसी को अलग नहीं होने दिया। यही लोकगीत की विशेषता है।

निर्विवाद रूप से लोकजीवन में लोकगीतों का काफी महत्व है।

'छठ' गीत का एक नमूना देखिये।

'काँचियों बाँस केरो बाँधी बाँधी लचकल है जाये।

'लोरी' लोकगीत उतनी ही प्राचीन है जितनी मानवसृष्टि। माँ–मौसी बच्चों को थपकिया देकर सुलाती है, इसमें एक सुन्दर उदाहरण –

आव – आव में कुदो चिरैया
अण्डा पारी – पारी जो गे।
तोहरा अण्डा आगिन लागौ
ननु आँखी नीन गे।

खेला लोक गीत के नमूने इस प्रकार –

सेल कबड्डी आला। तबला बाजाला। तबला मैं पैसा लाल बतासा।

फाग – गीत –

सौ राजा मेरे महा महाजल न्हाय
फागन फगुआ खेल के, जी.....
चैत नौचन्दी देखके नौचन्दी देख सो
राजन मेरे चैत नौचन्दी देख

धार्मिक गीत

हिन्दू नारी – जगत की धर्मप्राणता प्रसिद्ध है। जितनी नारी आस्थामयी होती है, उतने पुरूष नहीं। इसलिए जहां नारी वहां लोकगीत सर्वधा विधमान रहता ही है। किसी भी देवालय में साधारण से उत्सव के दिन भी जाकर देखा जाये तो अनेकों स्त्रियों वहां अपनी पूजा थाल सजाए दिखाई देगी। विभिन्न तीर्थ स्थानों, पुण्य वों पर जो उत्साह उनके मन में जागता है।, वह अन्यत्र मिलना कठिन है। विभिन्न गाँवों में देखने को मिलता है। स्त्रियां बैलगाड़ी तांगे तथा रेल मोटर किसी भी सवारी में झुंड के झुंड बनाकर मेले देखने को जाती है। उनके मन में मेला देखने का जितना उत्साह होता है उतना ही जितना यात्रा के दौरान लोकगीत, भजन, धार्मिक गीत गाने का भी उत्साह होता है, वह यह सब करके वह पुण्य प्राप्त करना चाहती है जैसे–

देवी – पूजन गीत –

देवी मेरी सतजुगी ज्वाला, कल में तेरा बास माँ।
देवी तेरा बाग लगा है सुहावना, फूल रही फुलवाड़ माँ।।
देवी तेरा ताल बना है सुहावना, जिसमें जाती न्हाय माँ।
देवी तेरा भवन बना है सुहावना, घंटों की झनकार माँ।।

देवागमन गीत –

राजा बली ने रचाया होम भूप सब जुड़ि आए।
इन्द्रलोक से इन्दर आए दी है नंगाड़े चोब
वही से बरसात आए। राजा...

कैलासों से आए महादेव, डूंडे बैल असवार
गौरजा संग लाऐ। राजा...
नगर कोट से आई भवानी हाथ गवा त्रिसूल
सिंह गरजत आए। राजा...

इस प्रकार सारे संस्कार लोकगीतों में विद्यमान है इन संस्कारों का जीवन में बड़ा महत्व है। मानव इन संस्कारों के द्वारा जन्मजात अपवित्राओं से छुटकारा पाकर सच्चे मनुष्यत्व को प्राप्त करता है। संस्कारों के विधान के पीछे यही दृष्टिकोण लोकगीतों में समाहित है। लोकगीतों में लोकमानस की सहज अभिव्यक्ति होती है।

लोकगीतों के पीछे सामाजिक परम्परा होती है।

इनमें मानवीय मूल्य और सम्मान का भाव छिपा रहता है।

परन्तु आज के समय में संस्कार, परम्परायें तथा लोकगीत लगभग खो गये हैं।. इसके बहुत सारे कारण है। जैसे विकास अपने–आप में सबसे बड़ा कारण है। विकास ने आपकी गति बढ़ा दी। उसके कारण आपकी गतिशीलता बढ़ गई नौकरी हो या फिर व्यवसाय इनके कारण हम दूर–दूर शहरों में जाते हैं। नया समाज नया वातावरण, नये लोग, नई व्यवस्थाएँ। ऐसे में आपको बहुत सारी चीजें छोड़नी पड़ती है। व्यस्तता एक ओर बहुत बड़ा कारण है जो इस विकास की देन है। इस व्यवस्ता के कारण भी कई तीज–त्यौहार हम छोड़ते जा रहे हैं। जब त्यौहार ही छूट गए तो उनसे जुड़े गीत भी हम भूलने लगे। अंनत चतुर्दशी, देवोत्थान एकादशी, रक्षाबंधन के बाद मनाया जाने वाला गाज का त्यौहार हम भूलते जा रहे हैं। जिसका सीधा प्रभाव लोकगीतों पर पड़ रहा है और लोकगीतों का महत्व हमारे समाज में कम होता जा रहा है। इसका एक मुख्य अन्य कारण भी है फिल्मी गीत संगीत जिसके कारण आज का युवा वर्ग लोकगीतों के स्थान पर विभिन्न संस्कारों, पर्वो, उत्सवों में फिल्मी गीतों को ज्यादा पसंद करते हैं और इनका चलन ज्यादा बढ़ गया है जिसका सीधा प्रभाव हमारे इन लोकगीतों पर पड़ा। धीरे–धीरे लोकगीतों का चलन कम होता जा रहा है। लोकगीत हमारी अमूल्य निधियां है। हमें इनकी रक्षा के लिए सतत प्रयत्नशील हो जाना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. डा० श्रीराम लोक साहित्य सिद्धान्त और प्रयोग पृ० 39
2. डा० पूरनचन्द, लोक संस्कृति के क्षितिज पृ० 16
3. जनपद अक्टूबर 1952, पृष्ठ–65
4. डा० नगेन्द्र, भारतीय नाट्य साहित्य पृष्ठ – 518
5. लोक जीवन के स्तर, डा० कृष्ण चन्द्र शर्मा, प्रकाशन कुरु लोक संस्थान, पृष्ठ – 76, 1977